वन्दना अवस्थी दुबे

मुख्त्यार गंज
सतना मप्र
मो.9993912823

कैसे मोक्ष हो यहां

कई सालों से अम्मा का मन था कि हम दोनों गया जायें और पापा का पिंडदान करके आएं। हर साल प्रोग्राम बनता और फिर किसी न किसी कारण से टल जाता। इस बार मैंने एक दिन बस यूं ही रेल्वे की साइट खोली और गया के रिज़र्वेशन देखने शुरु किये, सारी ट्रेनें फुल थीं। इलाहाबाद होके देखा तो मिल गया रिज़र्वेशन। आने-जाने दोनों का। रात में बैठ के बोध गया के होटल सर्च किए और एक बढ़िया होटल में कमरा भी बुक हो गया। नियत समय पर हम सतना से इलाहाबाद पहुंच गये, आने वाली ट्रेन भी एकदम सही समय पर आ रही थी, उसका अनाउंसमेंट सुनते ही हम प्लेटफ़ॉर्म नम्बर छह की ओर लपके। हमारे लपकते-झपकते ट्रेन भी आ गयी लम्बे-लम्बे डग भरती। भारतीय रेल की असली तस्वीर देखनी है तो स्लीपर क्लास में सफर जरूर करें, आनन फानन में हमें आरक्षण मिला था स्लीपर क्लास में। किसी प्रकार अपने डिब्बे में चढ़े। बर्थ पर पहुंच के देखा, कोई और महानुभाव गहरी नींद में सो रहे हैं वहां। बड़ी मुश्किल से जागे भाईसाब। जागने के बाद उतरने को तैयार नहीं बर्थ से। खैर तमाम समझाइश, डांट-डपट के बाद उतरे। हमने चैन की सांस ली कि अब सुबह तक यात्रा भली प्रकार होगी। लेकिन कहां , बर्थ पर अभी पैर सीधे किये ही थे कि अगला स्टेशन आ गया और यहां से भीड़ का जो रेला चढ़ा, उसे शायद हमारी बोगी ही पसन्द आ रही थी। किसी के भी पास रिज़र्व टिकट नहीं, लेकिन सब के सब सपरिवार तमाम तरह के सामान सहित डब्बे में ऐसे अट गये जैसे ये बोगी तो उन्हें विरासत में मिली थी।

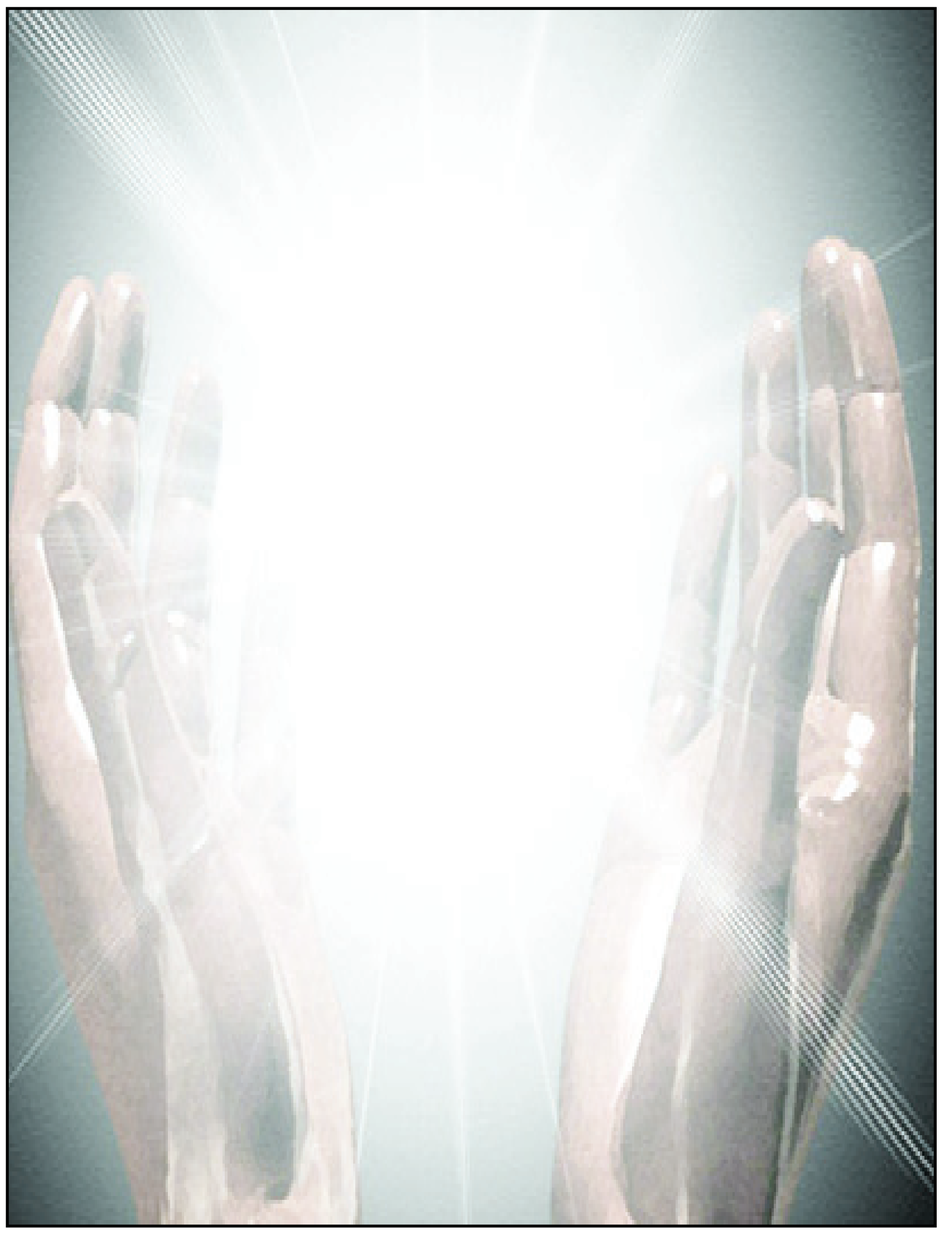

खैर, हम ऊपर वाली बर्थ पर थे सो सुरक्षित थे।

पूरी ट्रेन के किसी भी टॉयलेट में लाइट और पानी न था। मैं चार बोगी इधर और चार बोगी उधर तक घूम आई। लेकिन हर बोगी के टॉयलेट से बिजली नदारद, पानी भी। क्षमता से तीन गुना ज़्यादा सवारियां और टॉयलेट के ये हाल। समझ रहे हैं न? खैर जैसे-तैसे सुबह हुई, साढ़े छह की जगह सात बजे गया स्टेशन आया। हम ऐसे उतर के भागे जैसे किसी ने गले से पट्टा खोल दिया हो। होटल फोन किया कि हमारा चैक इन दस बजे है जबकि हमारी ट्रेन ने अभी ही पहुंचा दिया है तो होटल के मैनेजर ने सहृदयता दिखाई और कहा कि वो हमारा रूम अभी ही तैयार करवा देगा हम होटल पहुंच जायें। होटल पहुंच के नहाया-धोया और तत्काल ही हम वापस, गया के पिंडदान स्थल की ओर रवाना हो गये। पिंडदान यानि पूर्वजों की मुक्ति प्रक्रिया। लेकिन इस जगह पर पहुंच के लगा हम अपने पूर्वजों को किस गन्दगी में ढकेलने